UGC Approved Journal No - 49297

ISSN 2231 - 4113

Śodha Pravāha

A Multidisciplinary Refereed Research Journal

Chief Editor
Dr. S. K. Tiwari
Editor
Dr. S. B. Poddar

Contents

- **Geographical Indication: Brief Summary of Indian Position** 1-5
  Dr. Vinita Kacher, Assistant Professor, Lucknow University
- **Trafficking in Persons in South Asia: An Analysis of India Bangladesh and Nepal** 6-12
  Pratyashi Saikia Tandon, Research Scholar, Department of Sociology, Banaras Hindu University, Varanasi
- **Russian Energy Market: Diversification and Challenges** 13-17
  Dr. Nagesh Kumar Ojha, CR & CAS, School of International Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi-110067
- **Trends in Writing History: A Study in Multidisciplinary Approach** 18-23
  Shishir Kumar Mishra, Research Scholar (Ph.D), Delhi University
- **Harem Towards the End of Mughal Rule** 24-26
  Sugandha Rawat, Research Scholar, Mewar University Chittorgarh (Raj.)
- **The Maiden Female Novelist of Bihar: Manna Bahadur** 27-28
  Ranjeeta Tiwari, Research Scholar, Department of English, Nava Nalanda Mahavihara, Nalanda
- **Evaluation of The Programme for The Preparation of Secondary Science Teachers** 29-34
  Pankaj Kumar Singh, Research Scholar, Faculty of Education (K), B.H.U., Varanasi
- **The Teachings of Buddha Concerning the Inequality in the World** 35-37
  Ashish Kumar Tripathi, Research Scholar (M.Phil), Dept. of Buddhist Studies, University of Delhi –110007
- **Understanding Religiosity: Badauni's Views on Sufism and *Sharia*** 38-45
  Ikramul Haque, Ph.D. Research Scholar, Centre for Historical Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- **Rights of Children in India: Problem and Prospects** 46-51
  Anil Kumar, Research Scholar,Faculty of Law, Banaras Hindu University, Varanasi
- **Scientific Images in Tennyson's Poetry** 52-54
  Dr. Upendra Kumar Soni, Assistant Professor, Department of English, Mahamaya Government Degree College, Shrawasti (U.P.)
- **Analysing Emerging India-Vietnam Relations in The Context of Maritime Silk Road** 55-62
  Kundan Kumar, Persuing Ph.D from Department of Political Science, University of Delhi.

संदीप कुमार जायसवाल, शोध छात्र (एस.आर.एफ.), शिक्षा संकाय (क), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, (उ.प्र.) -221010

- मानवाधिकारों की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक भावभूमि : एक विवेचन **326-329**
  डॉ. पंकज कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, हरिश्चन्द्र पी.जी. कॉलेज, वाराणसी
- मानव जीवन में संगीत, कला के रूप में **330-331**
  ऋतिका त्रिपाठी, गायन विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- निःशस्त्रीकरण के मार्ग में बाधाँए : एक अवलोकन **332-334**
  डॉ. मधुरेन्द्र प्रताप सिंह, एसोसियेट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली (उ.प्र.)
- **Employment Creation in the Twelfth Five-Year Plan** **335-339**
  Major(Dr.) P.K. Pandey, Associate Professor, Department of Commerce, Shri Harishchandra Post Graduate College, Varanasi
- **Educational Philosophy of Rabindranath Tagore** **340-343**
  Dr. Alok Kumar, Associate Professor, Department of Education, Armapore P.G. College Kanpur.
- **Effect of Noise Pollution on Worker's Health : A Case Study** **344-351**
  Dr. Manoj Kumar Singh, Associate Prof. Deptt. of Geography, T.D.P.G. College, Jaunpur (U.P.)
  Dr. Rajeev Ranjan, Associate Prof. Deptt. of Geography, G.S.P.G. College, Samodhpur, Jaunpur (U.P.)
- **Gandhian Method of Confrontation** **352-355**
  Shri Azad Yadav, Assistant Professor (Gest Faculty), Department of Teacher Education, Shibli National P G College Azamgarh.
- **Gifted Children in the Inclusive School : Differentiating Instructional Approach** **356-367**
  Manish Kumar Gautam, Research Scholar, Faculty of Education, Banaras Hindu University, Kamachha, Varanasi- 10, U. P.,India
- सोरोकिन की दृष्टि में समाजशास्त्र **368-371**
  डॉ. शिवाकांत मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र), देवेन्द्र पी.जी. कॉलेज, बिल्थरा रोड, बलिया
- महात्मा गाँधी का प्रौद्योगिकी विचार-दर्शन **372-375**
  डॉ. अशोक कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जगतपुर, पी.जी. कॉलेज, जगतपुर, वाराणसी।
- पर्यावरण संरक्षण और जैविक कृषि **376-378**
  अरविन्द कुमार सिंह, प्रवक्ता (भूगोल), देवेन्द्र पी.जी. कालेज, बिल्थरा रोड, बलिया
- महिला सशक्तीकरण और शिक्षा **379-382**
  मीना कुमारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

महिला सशक्तीकरण और शिक्षा

मीना कुमारी *

महिला सशक्तीकरण के नाम से ही इसके अर्थ और शक्ति का पता चलता है। महिला सशक्तीकरण का सामान्य अर्थ है : महिलाओं को उनकी सार्वभौमिक जरुरतों को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना। किसी भी परिवार का निर्माण पुरुष और महिला दोनों से मिलकर होता है। अगर दोनों में से एक का भी विकास असंतुलित है तो परिवार का विकास संभव नहीं है। हमारे देश में प्राचीन समय में ही महिला सशक्तीकरण एक प्रमुख मुद्दा हुआ करता था। वेदों मे भी लिखा गया है–

"यत्र नार्यस्तु पुज्यते रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, वही देवता निवास करते हैं, और वह स्थान सुख, शांति व समृद्धि से परिपूर्ण होता है। अतः ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि हमें सुख, शांति व समृद्धि की आवश्यकता है तो हमें नारियों को समाज में पुनः स्थापित करना होगा।प्राचीन भारत की मैत्रैयी, गार्गी, मदालसा, लोपमुद्रा, अनुसूया, जाबाली, आदि महिला सशक्तीकरण के सशक्त उदाहरण है।

जब बात महिला सशक्तीकरण की होती है तो इन चारों बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक हो जाता है–

1. स्वास्थ्य 2. सुरक्षा 3. शिक्षा 4. आर्थिक स्वावलम्बन

इन चारों के विकास के बिना महिला विकास की कल्पना करना भी अप्रासंगिक है। इसमें महिलाओं की शिक्षा एक प्रमुख आधार स्तम्भ है।

'महिला सशक्तीकरण' एक ऐसा तथ्य है, जिसकी अवहेलना किसी भी समाज, देश के विकास की गति को धीमा कर सकता है और जब इस संदर्भ में भारत की बात हो तो यह और भी अधिक आवश्यक हो जाता है क्योंकि भारतीय महिलाएं न केवल देश की आधी आबादी है, बल्कि उन्होंने बीते दशकों में तमाम बाधाओं के बावजूद आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है। स्वतंत्रता के बाद से महिलाओं का 'सशक्तीकरण' नीतिगत मामलों में केन्द्रीय रहा है। अमूमन हम भौतिक व सामाजिक बुनियादी ढांचे में अंतर करते है, परंतु वास्तविकता के धरातल पर दोंनो पूरक है। स्कूल और स्वास्थ्य केन्द्र अर्थात् सामाजिक बुनियादी ढांचा कुशल, शिक्षित व मजबूत मानवशक्ति के निर्माण के लिये जरुरी है।

महिला सशक्तीकरण 'शिक्षा के साथ अपरिहार्य रुप से जुड़ा हुआ है। शिक्षा का तात्पर्य अक्षर ज्ञान मात्र नहीं है। शिक्षा निर्णय लेने की क्षमता, आर्थिक स्वावलम्बन और अधिकारों के प्रति जागरुकता का मार्ग प्रशस्त करती है। महिलाओं के सशक्तीकरण के लिये शिक्षा वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण संघटक और हस्तक्षेप है, बशर्ते इस शिक्षा की विषय वस्तु और कार्य पद्धति दोनों ही महिलाओं के पक्ष में हों। हमें उन प्रयासों को मजबूती प्रदान करने और बढ़ाने की आवश्यकता है, जो महिलाओं को शिक्षित बनाने, जानकारी और ज्ञान देने के किये जा रहे हैं, जो उन्हें पितृसत्तात्मक ज्ञान, नियमों, मूल्यों, व्यवहारों पद्धतियों को चुनौती देने में मदद करेंगे। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो केवल शब्द पढ़ने और समझने में ही महिलाओं की मदद न करे, बल्कि हमारी दुनिया को पढ़ने, समझने और नियंत्रित करने में उनकी सहायता करे, जो महिलाओं को केवल शिक्षा के तीन बुनियादी सिद्धान्तों में ही महारत दिलाएं, बल्कि उन्हें अपने स्वयं के जीवन में भी महारत दिलाएं और अपना भाग्य निर्माता बनने में मदद करे। महिलाओं की स्थिति में शिक्षा का बहुत महत्व है लेकिन शिक्षा के लाभों पर अब तक पर्याप्त बल नहीं दिया जा सका है। उत्तम शिक्षा और दक्षता प्रदान करने के लिये सरकार ने प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कार्यक्रम लागू किये हैं। सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से अप्रैल 2010 में शिक्षा का अधिकार (आरटीई)

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)